स्रोत विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर्स

RNI REG. NO: MPHIN/2007/20200

बीरबल साहनी

चित्र साभारः
http://www.traditional-india.blogspot.com/search?q=birbal+sahni

प्रसिद्ध पुरावनस्पति शास्त्री बीरबल साहनी ने भारतीय उपमहाद्वीप में पाए जाने वाले पेड़-पौधों के पुरावशेषों का अध्ययन किया। वे एक भू-विज्ञानी भी थे और उनकी रुचि पुरातत्व विज्ञान में भी थी। उन्होंने ही बीरबल साहनी इंस्टीट्यूट ऑफ पेलियोबॉटनी की स्थापना लखनऊ में की थी।

ईश्वर देवी और लाला रुचि राम की तीसरी संतान बीरबल साहनी का जन्म, 14 नवंबर 1891 को पश्चिमी पंजाब के सहारनपुर ज़िले के बेहरा नामक स्थान पर हुआ था। मोतीलाल नेहरू, गोपाल कृष्ण गोखले, सरोजिनी नायडू और मदन मोहन मालवीय जैसे लोग इनके पिता के पारिवारिक मित्र थे। बीरबल के व्यवसायी दादाजी ने रसायन के क्षेत्र में कुछ प्रारम्भिक शोध के प्रयास किए थे जिसका असर बीरबल पर विज्ञान प्रेम के रूप में हुआ। पंजाब विश्वविद्यालय में इन्हें प्रसिद्ध वनस्पति शास्त्री एस. आर. कश्यप से पढ़ने का मौका मिला। इमैनुअल कॉलेज कैम्ब्रिज से स्नातक किया और लंदन विश्वविद्यालय से 1919 में डी.एससी. की डिग्री प्राप्त की।

1917 में साहनी ने प्रोफेसर सेवार्ड के साथ मिलकर रिवीज़न ऑफ इंडियन गोंडवाना प्लांट्स पर काम किया। 1919 में इन्होंने म्यूनिख में प्रसिद्ध प्लांट मार्फोलॉजिस्ट गोबेल के सानिध्य में भी शोध कार्य किया।

भारत आने पर साहनी बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय और पंजाब विश्वविद्यालय में लगभग साल भर प्राध्यापक रहे। 1921 में ये लखनऊ विश्वविद्यालय के वनस्पति विभाग के पहले विभागाध्यक्ष बने। कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय ने साहनी के शोध कार्य को मान्यता देते हुए 1929 में एससी.डी. से सम्मानित किया।

1932 में पेलिओंटोलॉजिका इंडिका ने साहनी के शोध कार्य को मान्यता दी और एक वनस्पति विलियमसोनिया सेवार्डी को इसमें शामिल किया। यह नाम साहनी ने ही दिया था। इसी के साथ ही होमोज़ायलॉन के जीवाश्म का नया विवरण भी शामिल हुआ। साहनी ने देश भर से समर्पित युवाओं का समूह भी तैयार किया और विश्वविद्यालय शीघ्र ही वानस्पतिक और पुरा वानस्पतिक शोध का अग्रणी केन्द्र बन गया। लखनऊ विश्वविद्यालय में ही साहनी ने पेलियो बॉटेनिकल सोसायटी की स्थापना सितम्बर 1946 में की।

साहनी 1936 में रॉयल सोसाइटी लंदन के फेलो बने। यह ब्रिटेन का सर्वोच्च विज्ञान सम्मान है जो पहली बार किसी भारतीय वनस्पति शास्त्री को प्राप्त हुआ। साहनी 1930 और 1935 में होने वाली इंटरनेशनल बॉटेनिकल कांग्रेस के पुरा वनस्पति शाखा के उप-अध्यक्ष चुने गए। स्टॉकहोम में 1950 में इंटरनेशनल बॉटेनिकल कांग्रेस होने वाली थी जिसका अध्यक्ष बीरबल साहनी को चुना गया था। किन्तु कांग्रेस से पहले ही 10 अप्रैल 1949 को हृदयाघात से बीरबल साहनी का देहांत हो गया।

प्रकाशक, मुद्रक सी.एन. सुब्रह्मण्यम की ओर से निदेशक एकलव्य फाउण्डेशन द्वारा एकलव्य, ई-10 शंकर नगर, बी.डी.ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल - 462016 (म.प्र.) से प्रकाशित तथा आदर्श प्राइवेट लिमिटेड, इंदिरा प्रेस कॉम्पलेक्स, एम.पी. नगर, ज़ोन-1 भोपाल (म.प्र.) 462 011 से मुद्रित। सम्पादकः डॉ. सुशील जोशी